Bodleian Libraries
UNIVERSITY OF OXFORD

This book is part of the collection held by the Bodleian Libraries and scanned by Google, Inc. for the Google Books Library Project.

For more information see:

http://www.bodleian.ox.ac.uk/dbooks

This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 2.0 UK: England & Wales (CC BY-NC-SA 2.0) licence.

Hindi KrsV 1

13.C.41

Indian Institute, Oxford.
The Lucknow Sparks Library.
Presented
by
Munshi Newul Kishore.

Mahārāmāyaṇa.

Maha Ramaen

महारामायण

مہارامائن

विशूचिका आख्यान

जिसमें

सर्वोपकारार्थ कर्कटी राक्षसी का आख्यान मंत्रादिविधि
सहित है जिसके पठन पाठन श्रवण इत्यादि से
विशूचिका अर्थात् हैज़ा इत्यादि का भय नहीं होता
श्री पटिनी मल्ल की आज्ञानुसानुसार भट्ट श्री कृष्ण वल्लभ
पण्डित महाराज की संग्रह की हुई

पहिलीबार

स्थान लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर के छापेखाने में छपी॥

अक्टूबर सन् १८८० ईसवी

विज्ञप्ति

इस महीने अर्थात् अकूबर सन १८८० ई० पर्य्यन्त जो पुस्तकें बेचने के लिये तैय्यार हैं वे इस फ़ेहरिस्त में लिखी हैं और उनका मोल्ल भी बहुत किफ़ायत से घटाकर लिखा है परन्तु ब्योपारियों के लिये और भी सस्ती होंगी जिस को ब्योपार की इच्छा हो वह आपे ख़र्च के मुहतमिम अथवा मालिक के नाम ख़त भेजकर क़ीमत का निर्णय करले॥

नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
भाषा इतिहास	१ आदि पर्व्व	रामायण-मय मानस	विनयपत्रिकाबाबूशि·
महाभारत	२ सभा पर्व्व	दीपिका कोश आदि	पुराण
१ हिस्सा में आदिपर्व्व,	३ वन पर्व्व	तथा मयतसवीर स·	देवी भागवत
सभापर्व्व, वनपर्व्व,	४ विराट पर्व्व	तथा जिल्दबन्धी	वेदान्त
२ हिस्सा में विराटपर्व्व,	५ उद्योग पर्व्व	तथा मोटे अक्षरों की	योग वाशिष्ठ
उद्योग पर्व्व, भीष्मपर्व्व,	६ भीष्म पर्व्व	मयतसवीर	प्रबोध चंद्रोदय नाटक
द्रोणपर्व्व,	७ द्रोण पर्व्व	तथा मय दीपक	काव्य
३ हिस्सा में कर्णपर्व्व,	८ कर्णपर्व्व	रामायण अलग २	सूर सागर
शल्य पर्व्व, गदा पर्व्व,	९ शल्य पर्व्व गदा	सातों काण्ड	कृष्णसागर
सौप्तिकपर्व्व, ऐषिक	पर्व्व सौप्तिक पर्व्व मय ऐ-	१ बालकाण्ड	विश्राम सागर
पर्व्व, विशोक पर्व्व, स्त्री	षिक व विशोक व स्त्री	२ अयोध्याकाण्ड	प्रेमसागर
पर्व्व, शान्ति पर्व्व, राज	पर्व्व	३ आरण्यकाण्ड	ब्रजविलास
धर्म्म, आपदधर्म्म,	१० शान्ति पर्व्व-राज	४ किष्किन्धाकाण्ड	ब्रजविलास छोटा
मोक्षधर्म्म,	धर्म्म व आपद धर्म्म	५ सुन्दर काण्ड	कृष्णक्रिया
४ हिस्सा में शान्तिप-	व मोक्ष धर्म्म व दान	६ लंका काण्ड	विजय मुक्तावली
र्व्व, दानधर्म्म, अश्व-	धर्म्म	७ उत्तर काण्ड	अनेकार्थ कोश
मेध, आश्रम, बासक	११ अश्वमेध आश्र-	रामायण शब्दार्थकोश	छन्दोर्णव पिंगल
पर्व्व, मुशल पर्व्व, म-	म बासक मुशलपर्व्व	रामायण का इतिहास	कविकुल कल्पतरु
हाप्रस्थान स्वर्गारो-	महाप्रस्थान स्वर्गा-	रामायण मानसदीपिका	रसराज
हन पर्व्व हरिवंश प-	रोहन	रामायण कवितावली	सतसई सटीक बिहारी·
र्व्व	१२ हरिवंश पर्व्व	रामायण गीतावली	सतसई
महाभारत पर्व्व अ-	रामायण रामविलास	रामायण गीतावलीस-	सभाविलास
लैहदा भी हैं	रामायण तुलसीकृत	विनय पत्रिका बाबू सी·	तुलसी शब्दार्थ प्र·

श्रीगणेशायनमः

अथमहारामायण

लिख्यते

गुरुं गिरीशं गणपं गोपतिं गिरि धारिणं ॥ प्रणम्य वाल वो॰ बाय लिखामि सुख भाषि कम् १ भट्ट श्रीयुत कृष्ण वल्लभ सुधी धुर्येण सं लिख्यते राज श्री जिनराज राज पत्नी म॰ त्नार्थ वर्या ज्ञया ॥ भाषा वाल विशेष बोध जननी वाशि॰ ष्ट रामायण प्रोक्तानत्य विशूचिका भिध महो पाख्यान सं॰ बंधिनी २ बशिष्ठ जी राम जी सों कहें हैं रामजी ब्रह्म तत्व॰ तो एकही हैं अज्ञानियोंको अनेक रूप भासे है यही वात॰ आगे एक कर्कटी नाम राक्षसी ने कही है जो एक हिमा॰ चल पर्बत के पिछाडी देशमें कर्कटी नाम राक्षसी रहै सो॰ वह बिशूचिका की कन्या रहै महा श्याम जाको वर्ण रहे। बडी अन्याय की करन वारी सो एक हीनमन रहै महा डर॰ पावनी रहै कुहर को बस्त्र पहिरे श्याम वर्ण वाकी लंबी बा॰ हें जाकी तिनसों मानो सूर्य को पकर लेगी ऐसी दीर्घ अंध॰ कार में फिरो करे बडो शरीर जाको क्षुधा हू वाका बडी रहे का॰ हू तरे पेट भरे ही नहीं ॥ जीभ जाकी बाड वाग्निकी सीलह सहायो करे सो वह एक दिन बिचार करत भई जो मैं जंबु॰

द्वीप में जायके अनेक मनुष्यन को निगलों तो मेरी यह भूख
कछुक सिराय जैसे समुद्र अनेक जल जंतुन को अपने पेट मे
धरेहै और जैसें मेघ करके मृग तृष्णा सिराय है तैसे मेरी यह
भूख हू बुझे पर यह विचार भी कर्योहै जो ये संसारी जीव त-
पस्या मंत्र औषधी दान देव पूजादिकन सों सब अपनी रक्षा
करे हैं इनको कौन बाधा करि सके ताते होय न होय तप-
स्याही में करो जो तपस्या सो सब दुर्लभ ते दुर्लभ सबन को
मिले है ऐसे वह विचार करि सब जीवन के खाइबे की इ-
च्छा करि तपस्या के लिये काहू एक दुर्गम जगों को याद करत
भई करिके याद वा पर्वत के ऊंचे शिखर पे चढ़ी बिजुली स
री की जाकी आंखें चमके है कारी मेघमाला सरी की जाकी
देही चमके है तब वह वा पर्वत पैते आकाश की राह स्नान
कर बेको तपस्या करबे को नीचे उतरी स्नान कीनी अब ए-
क पांव सों ठाढ़ी भई चंद्र सूर्य से निश्चल आंखें कीनी ऐसे
तपस्या करत भई अब वाके क्रम सों दिन पक्ष मास ऋतु
बर्ष अनेक बीते जाड़ो गरमी कछू माने नहीं पर्वत सरी
की कठोर भई मेघमाला सरी की देही अपनी श्याम दिखा
वेहै ठाढे कारे जाके माथे के बार बाहें ऊंची करे मानो आ-
काश को पकड़ ही लेगी ऐसी रही तब ब्रह्मा जीने वा-
को देखी पवन सों सब अंग जाको जीर्ण होय रहो डुंकार
न्यारो करो है मांथेपर अंधकार न्यारो धरे है गहना ऐसे
चमके है मानो आकाश के तारागणही हैं ऐसी वाको
देखके ब्रह्मा जी आवत भये॥इति श्री मन् महा रामा-

यणे विसूची प्रकरणे राक्षसी वर्णनं नाम सर्गः ॥ ६७॥ वशिष्ठ
जी कहेहैं अहोराम अब वा राक्षसी को तपस्या करत हजार
बर्ष बीते तब ब्रह्माजी आये वाकी दारुण तपस्या देख वाको ब-
र देवे को आगे आय ठाढे भये वा राक्षसी ने ब्रह्मा को देख
मन करके नमस्कार करि यह बिचार कीनो जो मेरी या भूख
के मेटवे को कहा उपाय होय परंतु एक उपाय है जो में गुप्त
रूप सूची बन के सगरे जीवन के हृदय मे पैठ के सब प्राणि
न को ग्रसों तब क्रमसों मेरी यह भूख घटे एसे बिचार करन
वारी वा राक्षसी को देख ब्रह्मा बोले अरी बेटी कर्कटी उठ
मै तो पै बहुत प्रसन्न भयो जो तो को चहिये सो वर मांग
मैं देऊ यह ब्रह्मा को बचन सुनि वह कर्कटी राक्षसी बोली
बिना लोहे की सूई अथवा लोहे की ही सूई सी होयमें सब
जीवन के हृदये बैठों वशिष्ठजी कहेहैं यह सुनि ब्रह्मा कह
त भये जा ऐसेही होयगी और तू या सृष्टि मे विसूचिका-
होय सूक्ष्म रूप करि के सब जीवन को मारेगी जे प्राणी दु-
ष्ट भोजन करेंगे दुष्ट कार्य करे दुष्ट रहेहें दुष्ट देश वास करेंगे
तिन को तू मारेगी बाडु की लकीर सरीकी व्याधि रूप बि-
सूचिका होयगी भले बुरे सब प्राणीन को मारेगी और गु-
णी की चिकित्सा को यह मंत्र है सो में कहूंहूं ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं ।
ह्रीं रां विस्नु शक्तये नमः। भगवति विस्नु शक्ते एनां दह
दह पचपच मथ मथ हनहन उत्सादय उत्सादय दूरे कुरु
कुरु स्वाहा विसूचिके कः कः कः हिमवंतं गच्छ गच्छ जीव-
सः सः सः चंद्र मंडल गते स्वाहा ॥ यह महा मंत्र है यासें

बांये हाथ में न्यास करि मार्ज्जन करे फिर ध्यान करे मानो हि
माचल के साम्हे दौड़ी चली जातहै कर्कटी राक्षसी बड़ी क्रूर
मंत्र रूप मुद्गर सो पिसी जातहै और रोगी मानो चंद्र रसायन के
दह मे बैठाहै जरा मृत्यु सो दूरहै सब रोग व्याधि मुक्त है। फि
र साधक शुद्ध होय आचमन करिके सवरी विसूचिका
नकों मार्जन करे। ऐसो ब्रह्मा जी वासों कहि वरदान दे के
आकाश की राह सब देव तान को दर्शन देत अपने ब्रह्म
लोक को जात भये ॥ इति महा रामायणे वाशिष्टे बिसूचि
का पाख्याने सर्गः॥६८॥ बशिष्ट कहे रामजी वह राक्षसी
कर्कटी ब्रह्मा के गये उपरान्त अपनो शरीर सूक्ष्म करत भ
ई जो पहिलेही वा बड़े शरीर को वृक्ष की डारसरी को की
नो पीछे वाको शरीर पुरुष के बरोबर भयो फिर हाथ के बरो
बर फिर प्रादेश के बरोबर फिर अगुरी के बरोबर फिर उर्द
की फरी बरोबर फिर सूई सोहोय गयो। ऐसो लोहे की सूई
सरी को अपनो शरीर करि वह राक्षसी बड़ी शोभा पावत
भई ही और रत्न की सूई सी चीकनी लोहो तो दीखे नहीं
और पैनी तो बड़ी अति सूक्ष्म रूप दिखाई देत भई। मुख
सों मानो आकाश को ग्रसेगी आंखि कोश कोड़ि दीपके
देखिये जब जैसे किरण छूटे तैसी दिखाई देत है। कमले
के डोराशरी की ब्रह्म नाड़ी सी सुंदर जैन मत सरी की दि-
खाई देत भई अब यह ग्रसबे को चली कोई नजर न-
आयो तब चिन्ता करत भई अरे मैंने कहा वर मागो या न
हूने रूपसों कैसे जगत को निगलो बड़ी भूली मैं जो मैंने।

ऐसो बर मांगो आगो पीछो बिचारो नहीं ऐसे ही मैंन हनी। होय मरी ऐसे चिन्ता करे है तबही वा सूची रूपसो लगो ए- क दूसरो रूप वाको वैसोही सूक्ष्म बनो जोसो सूत को डोरा शूली कीसी पीड़ा को करन वारो भयो ऐसी वह राक्षसीन खा की धारसी सूक्ष्म फूल कील कीरसी पापी के मनो वृत्ति सी जीवन के प्राण हरबे को सूई रूप दोऊ सरी रवनाई जीवन के हृदय में प्रविष्ट होय सब को बाधा देत दसों दिशान को भ्रमत भई सांचहै सबही अपने काम हलुको भाभारी बने ही कर्कटी को छोड़ भयानक शरीर सूची रूप कीनो साचहै अल्प जीवनको थोरो सो कहू अर्थ चाहिबे लायक होत है। सूची रूप हृस्व रूप पिशाची रूप तपस्या करि कीनो साच है पुण्यात्मन को भी शरीर बंधन छुटे नहीं पापीन की कौन गिनती पीछे सूची पिशाची वह भई दिशन में फिरत भ- ई तब वाकी देही स्थूल पवन के वेग सों बिलाय गई शरत काल के बादर कीसीनाहीं। अब वह राक्षसी काहू के शरीर में प्रविष्ट होय बायु बिशूचिका भई एक के शरीर में प्रविष्ट होय जीव के हरन वारी बिशूचिका भई उसे वह बिशूचि- का कहूं तो तृप्त भई कहूं कहूं मंत्र पुण्य औषधीन के जोर सों नष्ट होय गई ऐसे वाको फिरत अनेक बर्ष बीते दोऊ देह करिके धरती आकाश में फिरन लगी धरती में धूरि सों। मिली रही हाथ अंगुरी रूपकरि रही आकाश में लाल बाद- ल के रूप सों रही बस्त्र में जीर्ण सूत के डोरा रूप करि रही। देहीन के भीतर नसा जालमें धूरि पराग रूप करि रही नदी

सरोवरन में सूखी धरती के रूप सों रही सूखी घास में सूक्ष्म
रेखा बन के रही अर्थहीन पुरुष में श्वास के रूप सों रही ब-
डे मोटे हाड के शरीर में कांपने के रूप सो रही अचेत जीव
में आहार शून्य रूप कमि रही कंपाय मान शरीर में रुखाई
के रूप सों रही ऐसे कहां ताई कहें अनेक रूप करिके अने-
क नगर में फिरत भई ऐसे जहां तहां जावा आई करत हा-
र पड़ी कहूं एक जगे विश्राम करवे के लिये गिर परी सब
शरीर वाको बिखर गयो । फिर वह सूची अपनी भीतरली
सत्ता सों उडि के फिरत भई जैसे वायु के वेग सों सूखी घा-
स उड़े तैसे दिशा विदिशा नमें फिरत भई दूसरे के पूर्ण क-
रवे के लिये चेष्टा आपनी करे हे जैसे पुराने जीर्ण कपड़ा
को पूर्ण सूई करे यहां यही दृष्टान्त जानिये । अब यह रा-
क्षसी अपने क्षीण पूर्ण जो रूप बढ़ो देखो तब भीतर ब-
हुत संताप सो करत भई प्राणीन के अंगमें सूक्ष्म बेध क-
रत जात हैं जैसे सूई कपड़ा के बीच और प्राणियों के बीच
घुस के सूई जैसे कपड़ा के बीच में सूत पोहत जाय तैसे आ-
प पैठत भई और तनक संचार करत थोड़ा जैसे छुरी तैसे वा-
धा करत भई सहज अपने रूप सों खेद उपजावत है। सांच
यहां सूई को दृष्टांत है जो वह सूई जैसे वस्त्र में दीर्घडोरा
को व्याप्त करे तैसेही विभूचिका प्राणियों के हृदय में बाधा
करे आंखन को अपने संचार सों विदीर्ण करे। सांच जे म-
र्म बेधी दुर्जन तिनको यही सुभाव है और कंथेन में कपड़ा
सी मालूम पड़े जाके देह में बेध करे ताको मुख देखके ऐसे।

विचार करे याको कैसे मारों यह मारनो मोको अच्छो लगो है श रीर मेरशमी कपड़ा सीकी लगो। भले बुरे को देखे नहीं सांच जड़न को यही सुभाव होयहै। और फिर यह विशूचिका सुई सी साची भई जो जैसे सूई कपड़ा के बीच डोरा कोडोर अंगुरी सोदबीरहे पैने मुख सों चिकने कपड़ा में घुसत चली जाय। तैसे ही यह विशूचिका ब्रह्मा के वरदान सों जीवन को बाधा करत भई। और गई भी नहीं सुख में सब नर रूकी और बुद्धि। नहीं पर पैनी बड़ी हृदय नहीं सबन के बीच विधी राजा की बेटी कहावे और अभागिनी। बिना बिगाड़ सब सों लड़ाई चाहे कनन को बेध करे याहीते सूची कहावे कबहू प्राणी को सुवा के ऐसा करे जैसा सूने वन में मानो पड़ो वन को वाने। अपनो मित्र कीनो। सांच अपने लायक मित्र सब कोई चाहे हैं। मूर्ख मूर्खन सों मित्राई करे बड़ो सुख माने हैं। औ र शरीर में सूई सी गाड़े जैसे लुहार कोई लोहे को शस्त्र बना वे वामें जैसे छोटे छोटे चोभा गाड़े। तैसे जीव की शक्तिहरे अपनी दुःख की शक्ति को प्रकट करे। और टूड़ी में जो समान नामा प्राण रहै वाको उलटो करे। उदान नामा गरे में जो प्रा ण रहे हैं व्यान नामा सर्व शरीर में रहै इनको उलटे करे हृदय में कंठ में शूल उपजावे प्राणी को उछाले रंग फेर दे मा। तबप्राणे करे बहुत कम हृदय सूई सी चले जैसे दरजी के हाथ की सूई कपड़ा में चले। और पाइने पेट रुधिर सुखावे ऐसे प्राणिन को पीड़ा देत अपने मन में बहोत तृप्त होन भई सांच दुष्टन। को दुख देने में बड़ो उत्सव होहै। कोड़ी मात्र द्रव्य सूमन को।

बहु लग्यारो लगेहै। प्राणियोंको अपनो अहंकार छोड़ो नहीं जा यहै। दोइ कौड़ी केलिये पराये पेट चीरे जैसे दुरजनते सय ह विशूचिका थोरे से अपने सुख के लिये अनेक प्राणीन के प्राण हरन लगी। और जैसे सूई कपड़ा में डोरा को परोहके जो धरी रहे तो मैली होय नित्य नित्य चलैतो उजरी रहे ऐसे ही यह विशूचिका सबन के शरीर में अनेक व्याधिउपजा वै तब निर्मल रहे नहीं तो बड़ो दुख माने। ऐसी वह बिसू चिका जीवन को मारत अपने मन मे बड़ो संतोष मानत भई सांच दुर्जन मनुष्य पराये दुःख में आप बड़ो सुख माने यह सुभाव ही है दुर्जन को। थोप एक साधारण बात कहे हैं बशिष्ठ जी जो यह विशूचिका को जो वर्णन हमने कियो रा मजी सो यह ब्रह्म कीही सब सत्ता जानो जो वह सत्ता चाहे सो करे कीच में बूड़े आकाश में चले दिशा बिदिशा पवन पा नी धरती गृह घर बन सब जगे विसूचिका रूप होय हाथमें कान में हृदय में नेत्रमें पीड़ा करे ऐसी ब्रह्म सत्ता जानिये बाल्मीकि जी कहे हैं इतनी कथा कहत बशिष्ठ थमे न-वही तो सूर्य अस्त होत भयो बशिष्ठ जी सायं संध्या करके उठे तब राम जी की सबही सभा उठी फिर सबेरे सूर्य के सा-थ फिर सभा जुड़ी जैसे सूर्य निकशो तैसेही सब सभा लो-क आवत भये ॥ इति योग बाशिष्ठ रामायण सूची ॥ व्यवहार वर्णनं सर्ग: ६८ बशिष्ठ कहे हैं याके पीछे वह कर्कटी राक्षसी बहुत समै बीते सबरे मनुष्यन के मांस सै तृप्ति भई। पहिले हीदिन में तृप्ति होय गई। फिर विचारि

जो मैं सूची भई या मेरे रूप सों थोरे ही मांस खाय बे में आवे है हाय मैंने कहा काम कीनो तो अपनो छोटो रूप कीनो बड़ो रूप मेरो हो तो तो बहुत मांस खाती देखो ये मांस तो बहुत मैं छोटी सी कहां ताई खाऊं मनुष्यन को लोहू बहुत। मीठो कहा करूं धरती में लोटूं कीच में डूबूं हाय मैं मरी अनेक मनुष्यन के पाइन सों मैं खूंदी हाय मेरे कोई नाथ नहीं अनाथ मैं मरी दुःख में दुःख पड़ो मेरे को सहेली नहीं दासी नहीं न मा न पिता न कोई सगो सोदरो भाई बेटा कोई नहीं मेरे देही को आसरो नहीं कहूं ठिकानो नहीं कहा करूं भटकत भटकत हार पड़ी आपत के कूवा में पड़ी कोई मेरो निकासन हारो नहीं नाश मेरो भयो जात है मैंने अपनो सरीर क्यूं छोड़ो कैसी बुद्धि कीनी मैंने जो कांच को मनिया तो कीच में तें काढ़ लीनो हाथ में तें चिन्ता मन कीच में डारो ऐसी कुबुद्धि कीनी मेरो मन मूर्छा खाइ है पराई लौंडी पराई चाकर मैं भई महा दयावनी पर बश भई अब चाकरी करूं अब यह जीवन के छोड़ देवे की इच्छा मेरी दुःख दाइ सी भई मैं बड़ी अभागिनी अभागही मेरो खुलो हाय मैं आंधरी होय गई वह पहलो अपनो बड़ो सरीर योंहीं छांड़ दीनो जैसे मेरो नाश होय तैसी बुद्धि भई मैं मच्छर सरीखी भई धूरि में मिल रही अब कौन मेरो उद्धार करेगो। तप सों ज्ञानीन को ऐसी बुद्धि कबहूं नहीं होय है। अब मेरो उद्धार कब कैसे होयगो सांच उसे परदेी जना के पास जान वारे को तनकु हू कजेरो नहीं होय तैसी अवस्था मेरी होय रही है। अब यह आप-

त्य मेरी कब ताईं रहैगी जो मेरे तगाड़ गढ़ैला में पड़ी लोटूहूं कब
मैं वैसेही पहाड़ शरीको शरीर पाऊंगी जैसे कछु मेरो पहिले रा-
क्षसी को शरीर हो सोई जो मेरो बन जायतो मेरे मन को चैन।
होय जो वैसो बड़ो शरीर मेरो होय तो पहाड़न के ऊपरि फिरं
बिहार करूं रुधिर मांस मज्जा खाऊं कबहूं तातो तातो लोहू पी-
ऊं सुख सो सोऊं यह सूची शरीर मैंने योंहीं निकम्मो कीनो।
बड़ो सो शरीर मेरो कहा यह छोटसो सूई को शरीर कहा दे।
खोतो मैंने सब अपनो सर्वस्व खोयो जो पहिले में पहाड़ सी
ही अब सुसिया सरी की भई हाय वह मेरो पेट बिंध्याचल।
की गुफा शरीको कहागयो वे मेरी बाहें पर्वत के शिखरस
री की नष्ट भईं वे आखें वे गहना वे कंधे बड़े बड़े वे मेरे पांइ स-
ब अंग मेरो नष्ट भयो कहा करों कहां जाऊं बड़ो दुःख मेरे
पड़ो जो मैं सूई भई माखीके पाइं सों चलायमान होतहूं।
हाय मेरो वह काजर को पहाड़ सरी को शरीर कहां गयो यह
तुछ सूई को शरीर भयो यह छोटो सो मेरो महरो भयो अब
मैं कैसे खाऊं मांस मैं मरी मैं ने अपने नाश करने की यह चेष्टा की-
नी ऐसे बहुत वह राक्षसी कर्कटी चिंता करत भई॥ इति महा
रामायणे वाशिष्ठे विसूचिकोपाख्याने विसूचिका विलापे सर्गः ५
॥ वशिष्ठ रामजी सों कहे हैं। रामजी वह सूची ऐसे बहुत वि-
लाप करि विचार करत भई जो मैं फिर तपस्या करों वह अप-
नो पहले बड़ो राक्षसी को शरीर पाऊं ऐसे विचार कर सूची
जीवन को मारनो छोड़ वही हिमाचल पर्वत के शिखर में
जाय तपस्या करत भई अपनो आपही सूची रूप कोंदेख

(लगातार)

तजात है। प्राण बायु रूप होय जीवन को मारत भई फिर वा
हिमाचल में बड़ी दौर्ई लगी देखत भई वा दोई में जायठारी
भई एक पांइ सों जैसे भाड़ वार में कोई सूखी घास सरीक।
फिर तपस्या बड़ी करत भई उ परो को मुख अपनो कारी
नी कारी हिंसा करन वारी एक सांपिनी को देखी वा सांपिन
ने अपनो मुंह ऊंचो करिथा के पास आई याकी सहेली।
सी बन गई सांच खोटे आदिमी को खोटोही मित्र मिले है
फिर सूची को सूर्य की तीखी किरण आतो सहेली दूसरी भ
ई सूची ने अपनी आंखि सकोर लीनी ऐसे तपस्या करन
वारी वा सूची को देख सबने वाकी चाहना कीनी जाइ देख
बायु ने हू बड़ी चाहना कीनी ऐसे वह सूची अचल होय
तपस्या करत भई कांपनो जाने छोड़ दीनो अपने वाही प-
हिले शरीर की चाहना करी ऐसे वह सूची हजार वर्ष की तप
स्या कीनी चौथे लोकन को संताप करत जात है तप तपस्या
की आगिन करके भयानक देही धारण करे है वाकी तपस्या
की अग्नि सों हिमाचल तपन लगो तब इंद्र ने देख बिचार
कीनो यह तपस्या कौन कि है जासों जगत सब तप रहो है
यह बिचार करि नारद सों इंद्र पूछत भयो नारद जी सूची
ने सात हजार वर्ष ताई तपस्या कीनी तासों सब जगत तप
उठो सांप श्वास लेहैं फुंकार भरे है पर्वत जरके टूट के पड़े
हैं देवता भाजे हैं समुद्र उमडे हैं दिशा धुरसैहैं मैली भई।
जात है यह कहा तब नारद कहन लगे इंद्र देख यह सूची की
तपस्या को बहुत प्रताप बढ़ो यह सूची क्षय को प्राप्त होय है

مہارا مائن-١٢

जगतहू उजरो जात है ऐसे नारद इंद्र सों कहत भयो ॥ इति महारामायणे वाशिष्ठे सूची उपाख्याने सर्गः ॥ ७२॥५ फिर वशिष्ठ कहे हैं रामजी सुनो इंद्र न कर्कटी राक्षसी को यह दुश्वृत्तांत सुनो नारद सों फिर इ पूछत भयो। नारद जी कहो वा कर्कटी राक्षसीने हिमाचल के शृंग में तपस्या करि सूची सूक्ष्म पिशाची बन कौन कौन भोग भोगे सो कहो। तब नारद बोले कर्कटी सूची बन लोहे की सूई सरीकी बन जीवन को प्राण घातक रति भई राक्षसी फिर सूई को आसरो छोड़ि वायु रूप होय प्राणीन के प्राण वायु द्वारा नस नस में घुस के मनुष्यन के मांस रुधिर को खात पीवत भई। शूल की पीड़ा नस में करत भई और अनेक तेर की पीड़ा करत भई मनुष्य मांस बहुत खाये बल चेष्टा सों किलोल करत भई अनेक बनन में पुष्पन की सुगंधि संगी पर्वतन के शिखरन में विहार करत भई मनुष्यन के मांस अनेक काटि के खाये जैसे तरवार सब देहीन की नाड़ीन में घुसे दिशा विदिशान में जाय प्राणीन के शरीर में जाय दीपक की ज्योति सी दिखाई देन लगी अनेक प्राण खाये लोहू पियो पवन सरीकी उड़ी जात दिखाई दे वा सूची ने छिपे २ सब प्राणीन के मांस रुधिर पिये जैसे नदीन में लहर उठे तैसे जीवन के शरीर मे तरंग उठावन भई ऐसे मेद मांस तो बहुत सों देखो आप छोटी और तृष्णा बड़ी करे खाइ न सकी और मनुष्यन को रुधिर मांस बहुत खायो और गधा ऊंट हिरण हाथी घोरा सिंहन के भी हृदय में पैठ पान पीयो भोग भोगो बिलास कीनो। नृत्य कीनो गीत गाये

(वाम)

वास कीनो। अनेक प्राणीन के देहन के साथ दिखाई देत नहीं शरीर तो जाकेहे पवन रूप आकाश रूप नहीं सो हांसो शरीर कहावे है ॥ अनेक प्राणीन के हृदय मांस रुधिर पान ॥ करि मतवारी होय रही नदै पकड़ी हथिनी सी की होय नदी नमे न्यारे किलोल करत भई बाहर भीतर के पवन रूपहोय सब जग जात भई गंध रूपहोय पुष्पन में पैठी कहूं अंबर औषधीन के बलसों नष्ट करदीनी ऐसे वह सूची जतन करती फिरती मन को संताप न शरीर को संतोष पावत भई अधर्मिण धर्मात्मान को सतावे है अब वह पहिले संत शरीर की याद करित भई बड़ी दुखित भई अपने पेट को भरोसो है तब वाने यह विचार कीनो जो जैसे पहिलो मेरो शरीर मोको मिले यह सूई को शरीर जाय वैसेही तपस्या करूं मैं करू ऐसे मन मे विचार करत भई फिर आकाश मे एक गीध उड़ो जात देखी वाही के पेट मे पैठ गई सो वह गीध वा सूचीको लिये काहू दिशा को उड़ि करि जो पडाहू वा सूचीने चाहो ताहींही लेजात भयो अंजनारण्य नामा पहाड़ ताके बीच एक वासन के झुंड मे उतारदेत भयो सो वह सूची वा पहाड़ के शृंग मेंजरी या गीधने देखा सी की सोही फिर वा जगेही एक पाद सो ठाढ़ी होय तपस्या करत भई वा गीध के प्राणन मेंते बाहर निकस करि पड़ी। वादिनतें वह सूची बड़ी तपस्विनी बनी नारद इंद्र सों कहेहें अहो इन्द्र ऐसे वा सूची को बहोत वर्ष बीते अब तुम वापे दया करि वरदेने को जतन करो वह जंगल मे। अकेली पड़ी तपस्या करे है जो वाको वर न देऊंगे तो वह

तपस्या के तेज सों जगत को जराइ देगी । वशिष्ठ कहैंहैं राम
इंद्र यह नारद के मुख सों सुनि सूची के देखबे को पवन को
भेजत भयो दिशान को तब वायु चलो सूची के देखबे को ।
आकाश की राह उतर जहां तहां वायु फिरत भयो सातों समु
द देखे लोका लोक पर्वत देखो स्वादूदक समुद्र देखो पुष्कर
द्वीप देखो सुरा समुद्र गोमेध द्वीप देखो इक्षु रस समुद्र क्रौंच
द्वीप क्षीर सागर श्वेत द्वीप घृत समुद्र कुश द्वीप दधि समुद्र
देखो जंबू द्वीप देखो सुमेरु देखो ऐसेही सब जगे फिरत २
वायु वहां आये । जहां सूची हिमाचल के शिखर में तपस्या
करे तहां आयो वा सूची को देखत भयो जो सूची इंद्र धनुष
सी लंबी होय रही हो घास के पुंज में दावा नल लगी तामें बैठी
तपस्या करे ऐसी सूची को देखि पवन बिश्राम करत भयो
इति महा रामायणे वाशिष्ठे सूची उपाख्याने सूची तपोवर्ण
ने सर्गः ७२ । ६ । वशिष्ठ कहैंहैं अहो राम ता पीछे वह पवन
जाय के हिमाचल के शिखर में तपस्या करत ऐसी जो वह सूची
ताको देखो । कैसे है सूची एक पाइ सों ठाड़ी हैं शुष्क जाके शरीर
है भोजन जाने छोड़ दीनो है पवन खाय है मुख पसारे है सूर्यकी
किरणन सों सूख रही है ऐसी वह सूची को देख पवन बोलत भ
यो । अरी तपस्विनि सूची ऐसी कठिन तपस्या क्यों करे है इत
नी बात ही पवन कहि सक्यो आगे सामर्थ्य न भई ठौर हू रहने
की वाके तेज करि जरन लगो हार आकाश को ही वायु चलो
गयो आकाश मार्ग में सप्त वात स्कंध को उल्लांघि सूर्य चंद्र-
मा के मंडल को उल्लांघि इंद्र के पास पहुंचो इंद्र न हु वा बायु

को आयो देख उठि करि मिलत भयो यह कही कहु पवन तू
सूची के दर्शन सो बड़ा पुण्यात्मा भयो वहां के समाचार कहि
यह सुनि पवन सबरी सभा के मों हीं इन्द्र सों कहत भयो।
इन्द्र जंबूद्वीप में हिमाचल नामा पर्वत है वाके उत्तर शिखर
में सूची तपस्या करे है कहा ताईं वाकी तपस्या को वर्णन करों
बड़ी घोर तपस्या वह करे वाने अपनी तपस्या के तेज सों सब
वह पहाड़ तपाइ दीनो है कोई वहां जाइ नहीं सको और सब
जगत को जरावेगो वह सूची तासों याको उपाय सिताबो करो
उठो चलो ब्रह्मा के पास वे याको जो इलाज करे सो सही ऐसे।
पवन की बात सुनि इन्द्रादिक देवता ब्रह्म सभा में ब्रह्मा के पा
स पहुंचे सब वृत्तान्त सूची को कहो तब ब्रह्मा कहे अहो देवता
यह मैं चलो वा सूची को बर देने को सो वाको बरदान देय तप
स्या सो निवृत्त करोंगो तुम चिन्ता मत्ति करो यह सुनि इन्द्र
अपने घर आवत भयो॥ इतने वा सूची की बड़ी बड़ाई भई
तपस्या बहुतही बड़ी बढ़ी जीवन मुक्तिसीही होय गई कहा
ताईं वर्णन करों। इति महा रामायणे वाशिष्ठे योगे सूची उपा
ख्याने सूची तपो वर्णनं सर्गः॥ ७३॥ ७ वशिष्ठ कहे हैं तदु
परांत हज़ार वर्ष पीछे ब्रह्मा जी वा सूची के पास आय वच
न कहत भये अरी बेटी जो तोको चाहिये सो मांग मैं ब्रह्मा
तोको बर देवे को आयो हों ऐसे जब ब्रह्मा कहिन लगे तब
वह सूची महान हनेरूप सों वर्तमान जैसे बुभे आंच की
उष्मा होय तैसी सूक्ष्म जीव कला रूप कछु बोल न सकी फि
र मन में विचारी कहा बर मांगों मेरे तो काहू बात की कमी

नहीं ऐसीही सदा सांत सुखित में रहूं ऐसो सुख मोको दी-
जिये में अपने ज्ञान सों पूर्ण हों जैसी मैं बैठी हों तैसीही मैं
यहां हीं बैठी रहों और मोको कछु नहीं चाहिये है इतने दि-
न ताईं मोको मोको पहिले बड़ो अज्ञान हो अब मैं उपशां-
त चित्त भई भले बुरे कछु पदार्थ मोको चाहिये नहीं इतनी
कहि वह सूची चुप्प होय गई तब ब्रह्मा वाको चुप्प देखबो-
ले अरी बेटी मैं तोपै बहुत प्रसन्न भयों बर मांग कहा देऊं
तोको कछु दिन या संसार में भोग सुख भोग पीछे ब्रह्मरू-
प में जाय मिलेगी तेरी यह तपस्या को फल खाली न पड़ेगो
और तेरो जो यह सूक्ष्म रूप है सो यह तेरे देखत देखत बढ़ि
जाय गो पहिले कीसी नाहीं पहिलो ही बड़ो राक्षसी कर्कटी
टी को शरीर होय जाय गो तूभी ध्यान करत सदा यहांहींबै-
ठी रहियो जब भूख लगे तब पापीन को देख देख खाइयो।
यामें तोको दोष कछु न होयगो यातें तू न्यायवृत्ति अन्याय
बाधिका होयगी जीवन मुक्ति होय कृतार्थ होयगी यह कहि
ब्रह्मा जी अपने ब्रह्मलोक को जात भये। अब वा सूची को
शरीर नन्हो हो पर ब्रह्मा के बरदान सों बढ़ने लगो क्रम सों ब-
ढ़ो जो जैसे वह के बीज में बट को वृक्ष रहे तैसेही बढ़ो प-
हिले तो प्रादेश अंगूठा तर्ज्जनी अंगुली की अन्तराय बरोब-
र पीछे वृक्ष की डार बरोबर पीछे वृक्ष की बराबर ऐसेही बढ़-
त बढ़त ज्योंका त्यों पहिलो ही काजर को पर्वत सरीको भ-
यानक राक्षसी को शरीर होय गयो ॥ इति महा रामायणे यो-
ग वाशिष्ठे सूची उपाख्याने सर्गः ॥ ७४ ॥ अब वशिष्ठ जी कहैं हैं

(वाल्मीकि)

वासे पीछे वह सूची ज्योंकी त्यों कर्कटी राक्षसी होय गई वहाँही बैठी ध्यान करत भई अचल होय के। ऐसे ध्यान करत वाको छः महीना बीते प्राणायाम करत छः महीना पीछे जागी तब वाको भूख लगी जो देह को स्वाभाव मिटे नहीं है तब वह चिन्ता करत भई कहा खाऊं कैसे मेरी भूख मिटे भोजन तो न्याय को करनो अन्याय भोजन तो न करनो मोको योग्य नहीं ताते न खानो और मरणो कबूल है और जो शरीर थोड़ों तो यह अन्याय है अन्याय भोजन तो करनो अच्छो नहीं जो बिष की बरोबर होहै लोक की रीति को भोजन अच्छो कहावे है मरन वा जीवन कछू मोको अच्छो नहीं दीखे है दिन रात मोको मोह ही केवल है ताते देह बुद्धि छोड़। शांत होय रहूं। बशिष्ठ कहे हैं वह सूची यह कहि के चुप्प होय रही इतने में आकाश में वाणी सुनी राक्षसी सुभाव जो वाने छोड़ो तासू पवन प्रसन्न होय कहत भयो अरी कर्कटी तू मूरखन को ज्ञानोपदेश करु सितावी। जो मूरखन को ज्ञान देने में बड़ो पुण्य है। जो तेरो समझायो न समझेगो वाको तू भक्षण करियो यामें अन्याय पाप तोको कछू न होयगो। यह सुनि सूची बहुत राजी भई वाही बिरयां वा पर्वत के शिखर सों उतरी ऊपरते नीचे आई वहां सों चली किरातन के देश में आई जहां जहां अन्न पशु लोक बहुत हैं याको भोजन बहुत मिले अन्न फूल फल हिरण पशु पक्षी बहोत देखे। फिर महा श्याम वर्ण वह सूची हिमाचल शिखर की तरहटी में किरात देश में गाढ़ी अंधेरे की रात्ति में प्रविष्ट होय अंधेरी रात

के बीच बजार में चली॥इति महा रामायणे योग वाशिष्ठे सूची
उपाख्याने सर्गः॥ ७५॥ वशिष्ठ मुनि कहे हैं वाही समय में कि
रात नगर में अंधेरी रात भई गाढ़ो जामें अंधेरो चंद्रमा नक्षत्र
कछू नहीं तामें मंद मंद चलनो बने तामें सूची अपनी राक्ष
सीन को संग ले कर चलत भई अंतःपुर में स्त्रीन के भूषण के
शब्द को सुने बन में उलू बोले हैं चोरन को संचार न्यारो होत जात है
अपने अपने घर में नायक अपनी सुंदरीन के साथ शयन करे
हैं रात्रि वह कैसी दीखे है मानो काजर को समुद्र ही उमड़ो मा
नो काच को पर्वत ही उठो आवे है तरवार सो भी न कटे ऐसो अं
धेरो जामें चोर दीखे है अज्ञान की नींद जहां बड़ी बढ़ रही है। ऐसी
रात्रि में वाही बिरियां सब नगर के सोवत वह किरात भीलन
को राजा वाको मंत्री दीवान ये दोऊ नगर की चौकसी करबे।
को निकसे तब जंगल में वे दोऊन को कर्कटी राक्षसी देखत
भई अब बिचार करत भई आज मोकों बहुत सो भोजन मि
लो ये मूरख दोऊ हक नाहक मरिबे को आये जो मरण हारे
होहैं वाकी बुद्धि औरही होय जाय है। जाको पाप उदित होय
है सो मरण पावे है यह ब्रह्मा ने अनादि मर्यादा सृष्टि आरं
भसों करि राखी है। ताते मैं आज इन को भक्षण करोंगी ये
भोजन मोको मिले हैं पर एक बात को बिचार है जो ये गुण
वान् श्रेष्ठ पुरुष होंय तो इन के भक्षण करबे में बड़ो पाप मो
को लगे गो मोको यह अच्छो नहीं लगे जो गुणी पुरुष को।
मारनो। तासू देखूं इनकी मैं परीक्षा करों ये गुणी हैं वा निर्गु
णी पापी वा पुण्यात्मा कैसे इन्हें परख तो लेऊं पीछे जैसी।

होंयगी तैसी करोंगी। ऐसो है विचार गुणी पुरुषको तो सर्व-
था सन्मान ही करनो भलो हो है वासो बिगाड़ करनो भलो न-
हीं। जो ये गुणी भये मैं इन को न खाऊंगी और भक्ष मोको न
मिलेगो तो मेरो मरण होय गो तो होउ यह अच्छो जो धर्म तो
पलैगो। पाप करि जीवने सो तो मरणो ही भलो जो गुणवा-
न के संग सो मृत्यु हू मित्र अपनो होय जाय है। तातें होयन
होय मैं इन को परखूं तो सही कैसे हैं। गुणी वा औगुणी दे-
खूं कैसे हैं। इन सों प्रश्न करो हूं कछु बात पूछूं हूं जो ये कैसे
उत्तर देंगे। जो इन पे उत्तर मोको देनो न आवेगो तो मैं इ-
नहिं अवश्य भोजन करूंगी यामें संदेह नहीं। वशिष्ठ कहे-
हैं अहो राम वह कर्कटी सूची राक्षसी यह विचार करि चुप्प होय
गई ॥ इति महा रामायणे योग वाशिष्ठे सूच्युपाख्याने स-
र्गः ॥७६॥२०॥ वशिष्ठ कहे हैं वाके उपरांत वह राक्षसी रा-
क्षस कुल की मंजरी अंधकार में मेघपंक्ति की सी नाईं गहो-
शब्द करत भई नाद को करि कठोर यह वचन बोली जैसे ग-
र्जे के मेह ओलान को डारे तैसे कठोर बचन बोलत भई। अ-
रे अरे या घोर बन मे चंद्रमा सूर्य सरीके तुम दोनों कौन हो। थो-
ड़ा सरी के मरवे को उपाय हो। अपने मन में तो तुम बड़े बु-
द्धिमान कहा हो परहो बड़े कुबुद्धी हाय कहा करों मेरे मोहड़े
में पड़े जीवित न बचोगे। ऐसे जब राक्षसी कहत भई तापी-
छे तब यह राजा बोले अरे अरे भूत तू कौन है कहां रहे अ-
पनो शरीर दिखाव तेरे या डरावने बाल सों हम डरन हारे न-
हीं हैं। मतलबी को सब कठिन भी काम आय पड़े पै करनो-

ही पड़े है तू हम को कहा बोली सूं डरपावे है तो सरी के सीघम-
न पुरुष नष्ट होय जाहैं। इतनी वात राजा ने कही ताकों सुनि
वह राक्षसी ने मन में यह कही जो याने अच्छी ठीक वात कही
इतनो बिचार करी अब अपने शरीर के दिखायबे के लिये
और डरपायबे के लिये फिर हूं गाजत भई और खिलखि-
लाय के हंसत भई। तबतो वह राजा और मंत्री इन दोनोंने
वह राक्षसी देखी जो अट्टहास करे है और कैसी है मानो प्र-
लय काल की बिजुली ही कड़के है मानो काल रात्रिही है।
श्याम अति डरपावनो जाको शरीर है भयानक जाकी आंखें
हैं नागी है कपड़ा हू नहीं ओढ़ै पहरे है अंगारे वाको उछाल-
न जात है अनेक रूख जाने अपनी दौड़ के झपेट सूं तोड़े है ऐ-
सीही साम्हे चली आवे है। ऐसी को विन राजा मंत्रीन ने देखी
देखि के वे डरपे नहीं वड़ो धीरज पकर के जहां के तहां ठाढ़े
होय गये। फिर विन में से मंत्री बोलो अरी महा राक्षसी यह
जोरे हमारे ऊपरि तू कहा करे है हमें यासूं हंसी आवे अथ-
वा सांच है तुच्छ आदिमी लुगाई बोदीन पै वड़ो जोरा करे है।
धीर शूरन के आगे भाजे हैं हमारे आगे तो सरीखी हजारन
मारवी कहा करि सके हैं हम तोको ऐसीही मीज डारेंगे ताते
तू यह आटोप संभ्रम अपनो छोड़ दे गरीबी पकरि हमारे
पास आव जो सब कछू गरीबी मुलाइमी सो मिले है जो
जोरो हमे दिखावेगी तो हम याही छिन तोहि मार डारेंगे यह
राक्षसी सुनि फिर मनमें बिचार करी जो देखों कैसे शूर पराक्र-
मी ये पुरुष अहो वड़ो आश्चर्य है जो मोसो भी डरे नहीं सहज

केनहींहै ये कोईबड़े आदिमी ज्ञानी हैं जो बोली सों सूरत सों नज रसों आदिमी शूर कातर कैसो भीहो पहिचानो जातहै । इन ने मेरी वात जानी मैंने इनकी मनकी वात जानी अबमो तो इन को न मारूंगी जो ये अविनाशी अबही अमर हैं और ज्ञानी बड़े दीखे हैं होय नहोय कछु संदेहन की वात पूंछों जो ये वा वात को उत्तर देंगे तो मैं इनको मारोंगी नहीं और जो इनपै उत्तर न आवे तो मैं इन को खाऊंगी यामें संदेह नहीं ऐसे वह राक्षसी विचार करि विनसों पूछत भई अरे तुम कौन हो । कहा तुमारो नाम कहा जाति कहा वास कहां यहां जंगलामें राति की विरियां आये हो शूर वीर बड़े दीखो हो तुम्हें देख । मेरे मन में दया भई जो तुमको मारूं नहीं मित्रता करो चाहूं हूं । यह सुनि राजा को मंत्री बोलो सुनि राक्षसी जो यह मेरे संग है सो भीलन को राजा है मैं याको दिवान हों सब राज काज कर्त्ता या नगर की रक्षा करवे को हम दोऊ निकसे हैं जो राजान को यही धर्म है दिन रात्रि दुष्टन को दण्ड देनो धर्मात्मान । की रक्षा करनी । यह सुनि राक्षसी बोली अरे तूही या राजाके हां खोटो दुर्बुद्धि मंत्री है जो राजा को नाश करवायो चाहे है । जो मंत्री को यह चहिये जो राजा कूं धर्म की शिक्षा करे भली वात सिखावे न पापकारी राजा को बिगाड़े है आप बिगड़ रह्यो है जो राजा को भली वात न कहे वह मंत्री कहा । जो सुने माने नहीं वह राजा कहा तुम बहुत भले ज्ञानी आदिमी । दिखाई देते हो जो मैं तुमसे कछु पूंछों हों वाको जो उत्तर देउगे तो मेरे पास ते बचोगे नहीं तो मारे जाउगे । अरे राजा और

मंत्री मेरे ये प्रश्न हैं इन के उत्तर की मो को बहुत दिन सों चा-
हि लगि रही है अब तुम मेरी चाहना को मेटो जो अंगीकार
करि कार्य करे वाको कबहू विनाश नहीं होत है ॥ इति श्री
महा रामायणे योग वाशिष्ठ सूचीउपाख्याने राक्षसी विचार
सर्गः ॥ ७७ ॥ २१ ॥ और वशिष्ठ कहे हैं अहो राम वह राक्षसी इत
नो कहि करि प्रश्न करबे को आरंभ करत भई जब राजाने कही
पूछ पूछ कौन कौन तेरे प्रश्न हैं तब कहत भई । वशिष्ठ कहे हैं ।
रामजी विन प्रश्नन को तुम सुनो ॥ अब राक्षसी कहे है अनि
गिनीन एक न धनी समुद्र सरीकी कौनसी वस्तु है जाके बीच
अनेक लाखन ब्रह्मांड रहे आवे हैं । १ । और कौन वस्तु शून्य
आकाश सरीखी है जो वस्तु है ऐसा कहावे नहीं है ऐसे कहावे
सो कहा है । २ । मैं कौन हूं । तू कौन है । कौन चले है । और न च-
ले है । और कौन नहीं ठौर रहे । चेतन अचेतन कौन है । आका-
श में चित्र को लिखन वारो कौन है । जो वस्तु अग्नि है और ज-
रावे नहीं सो कौन है । कौन सो बिना अग्नि अग्नि उपजे । कौ-
न सूर्य चंद्रमा अग्नि तपस्या बिना रहे सब को नाश करे । बि-
ना आंखि देखे बिना कान सुने बिना हाथ वस्तु को पकरे बिना
पांय सब सों आगे दौड़े और स्थावर जंगम लता बेल रूख म-
नुष्य लाखन जीवन को उजारो करन वारो कौन है । आका-
शादिकन को उपजावन हारो कौन है । संताप कौन है । स्वभाव
कौन ने बनायो है । जगत को रक्षक कौन नाशक कौन । जीव-
लुन हनी है जगत्को अपने बीच राखे । सब को उजेरो करे ।
अस्ति नास्ति कहावे नजीक रहे दूर ते दूर भी रहे । साण पलघटी

ऐसे अनेक रूप काल कहावे। आंखन को दिखाई देनहू दि-
खाई दे प्रत्यक्ष कहावे चेतन अचेतन कहावे। सर्वरूप होय
जतन सों न मिले सब जीवन को जिवावे। सूक्ष्मते अति सूक्ष्म
रूप रहे सब को प्रकाश करे सब को बीज कहावे। जितनी कछु
लोक रचना या संसार में है सो सब को बनावन हार ऐसो कौन
है इत्यादिक वेदांत शास्त्र के प्रश्न अनेक वा राक्षसी ने कीने।
संस्कृत योग वाशिष्ठ में विस्तार देखि लीजो हम कहां तांई लि-
खें। फिर वह राक्षसी कहन लगी और राजा और मंत्री ये ये बात
मैंने तुम सों पूछी हैं इनको एक औरते उत्तर देऊगे तो आज
बचोगे नहीं तो मेरो भोजन बनोगे। विकट नाद हुंकारत भई
इतनो कहि वह राक्षसी चुप होय गई॥ इति महा रामायणे यो-
ग वाशिष्ठे सूची उपाख्याने राक्षसी प्रश्नः सर्गः॥७८॥ श्री व-
शिष्ठ राम सों कहे हैं अहो राम वा बड़ी अंधेरी रात्रि में वा जंग-
ल के बीच वा राक्षसी ने इतनी जब बात कही तब मंत्री बो-
लो। सुनिरी राक्षसी अपने प्रश्न को उत्तर क्रम सों मैं कहूं हूं
तैंने जे प्रश्न कीने तिनके सब मिल के एक ही यह उत्तर है
जो परमात्मा पर ब्रह्म ही को तैंने कहो। जो वह ब्रह्म ऐसो ही
है जो ब्रह्म कहने में नहीं आवे मन सों जप करो जाय चैतन्य
रूप एक है न हने तैंन हनो आकाश सरीको तो ब्रह्म के बीच
सब यह जगत छोटो बड़ो रहे है ऐसे जगत्त की सत्ता और अ-
सत्ता वाही ते भई है अनुभव में ही केवल आवे है योगीन को
वाही की सत्ता सों जगत्त सांचो सो दिखाई दे है आंख नाक
कान ते सब इंद्रिय हैं तिनको गोचर वह नहीं सर्वव्यापक वह है

तासों सब भोगेहै चैतन्य सूक्ष्म अलक्षित सब इंद्रियन सोंबा-
हर है। काहू तें वह ब्रह्म झूठो नहीं बनेहै वही जगत कों उपजा-
वैहै व पालै संहार करै है। वा ब्रह्म समुद्र में यह सब जगत डूबो
है दिखाई नहीं देहै यातें नाह नोहै वह ब्रह्म ज्ञान में आवै।
तातें अशून्य हू नहीं कहावे है मैं हूं यह बुद्धि तूं है यह बुद्धि है-
त की बुद्धि सो भासै है आप अपन पे को जानै है महा शरीर
है बड़े में बड़ो छोटे में छोटो चैतन्यरूप में सब जगत समाय
रह्यो है सब जगमें वह व्यापक होय रह्यो है जैसे आकाश के
गमना गमन होहै तैसे ही वा ब्रह्म की सत्ता है चेतन जड़ सब
जगत वाही को बनायो है पत्थर में वाही की सत्ता है जीवन में
वाही की सत्ता है महा व्योम के बीच चैतन्य रूप वही है विचि-
त्र जगत की रचना वाही की कीनी है अग्नि में सत्ता वाही।
की है जल में थल में सूर्य में वही व्यापक है वह ब्रह्म प्रकाश
रूप है दृष्टि गोचर नहीं अनुभव में ही आवै है हृदय घर को
प्रकाशक दीप के सब इंद्रियन को प्रकाश करन वारो है सब
पदार्थन को अदर्शन दर्शन वही करै है। लता गुल्म अंकुर
वृक्ष इनको सूक्ष्म बीज वही है। वही ब्रह्म काल आकाश
की क्रिया सत्ता स्वभावन को करन वारो है सब को वही स्वा-
मी कर्त्ता पिता माता भोक्ता है। जगत रतन को उपजावन।-
हारो सूक्ष्म वही है प्रमाण को करन वारो प्रमाण विषय वही
है। वही ब्रह्म सब जगत में फूल रह्यो है वह ही जगत समुद्र।
में रतन सरीको है। पर्वत रूप वही सरसों के दाने बराबर वही
है। यह सब जगत वाही की सत्ता है वही सत्य है सुमेरु सरसों

सरीको वहीहै काल रूप वही छिनपल घड़ी पहर दिन पक्षमा-
स ऋतु वर्ष युगादिकरूप वहीहै सत्य असत्य दृष्टांत स्वप्नदुःख
काल मुख रूप वहीहै। हलुको भारी जो पदार्थ सो सब वाही।
को रूप है। दुःख में थोरो सो कहूं समय बड़ो है यहे सुख में ब-
हुत सो हूं समय थोरो सो कहो है। यह बात हरिश्चंद राजा को भ-
ईजो दुःख में वाको एकरात बारे बरस की बरोबर बीती। कार्य
कारण रूप वही है जैसे एकही सोनो अनेक गहना रूपहो है
तैसे ही यह ब्रह्म है ॥ और अनेक शास्त्र की रीति सो वाकी
सत्ता अनेक रूपहै एकरूप भीहै कहां तांई में वर्णन करों ते-
रे सब प्रश्न न को यही उत्तर बने है यह जानि कहा तांई कहूं।
इति महारामायणे योग वाशिष्ठ सूची प्रकरणे राक्षसी प्रश्नो-
त्तर सर्गः॥ ७८॥ १३॥ वशिष्ठ कहेहैं अहोराम ऐसे जब वामं-
त्री ने राक्षसी को उत्तर दियो तब वह राक्षसी फिर बोली। अ-
हो मंत्री श्यावास धन्य है तू देखो तैंने कहा सुंदर पवित्र पर-
मार्थ कीवात कहीहै भले तैंने तो कही अब यह राजा बोलो
कहो या राजा की हूं बाणी मैं सुनूं॥ वशिष्ठ कहेहैं ऐसे जब
वह राक्षसी कहन लगी तब राजा हू बचन बोलत भयो। क-
हाकि जैसे जैसे परमार्थ ब्रह्म को विचार मंत्रीने कहो तैसे
ही शारीरक संबधानुसार सो ब्रह्म की सत्ता एक अनेक रू-
प उपाधि सू दीखेहै तासू ब्रह्मही एक सत्य है और सब मि-
थ्याहै ऐसे अनेक तरे की बात राजा हू कहत भये॥ औरयह
कहतभयो किजो द्वैत भावना जोयह दिखाई देत है सोसब
झूठी है। ऐसे जब राजा ने भी अनेक शास्त्रनकी बोली कही

तब तो वह राक्षसी बहुत प्रसन्न भई कहन लगी अहो ये दोनों
बड़े गुणी हैं ये मारे न चाहिये ऐसे वह राक्षसी मन में बिचार क-
रि फिर सब को सुनावत पुकार के कहत भई अहो मंत्री अहो
राजा तुम दोनो ने भली सुंदर बात कही सत्य कही। कि जो पर-
मात्मा ब्रह्म सूक्ष्म ते सूक्ष्म है एक है सर्व स्वरूप भी है आका-
श रूप है वृक्षादिकन में बीज रूप है वट के बीज में जैसे बिचार
कीजिये तो संपूर्ण वह वृक्ष वा बीज मे समाय रह्यो है नहीं तो वह
होतो कहां ते ऐसे ही यह ब्रह्म है यह ज्ञान मोको तो पहिले ही
कछू भयो हो अब तुमारी बोली बचन सुन के बड़ो दृढ़ पक्को
ज्ञान मोको भयो मैं यह ज्ञान जब ताईं पाई नहीं तब पहिले।
अनेक जीवन की हिंसा करत ही। अब तो मैंने ज्ञान पायो सब
हत्या करनी छोड़ी राजा तू हू मेरो बड़ो आशी भयो मैं तोपे प्रस-
न्न हूं जा काहू को ऐसो ज्ञान होय वाको मैं कबहूं दुःख न देऊं-
गी तू तो राजा महाज्ञानी है तो यही बिशूचिका को मंत्र सिद्ध
है तो सरीके धीर पुरुषन को कछु कठिन नहीं तथापि शरीर सं-
बंध सो जो कछू नाड़िन में शूलन की बाधा होय वाकी शांति
के लिये जो यह ब्रह्मा ने मंत्र कह्यो है सो राजा तुम मेरे पास तें
सुन ल्यो मैं दोनो न को बताऊं हूं। महा उपदेश करो हूं आओ
मेरे पास मैं उपदेश करूं॥ इति महारामायणे योग बाशिष्ठे
सर्गः॥ ८०॥ २४॥ यों बशिष्ठ कहे हैं अहो राम राजा वह मंत्री
दोऊ यह राक्षसी को बचन सुनि के बहुत प्रसन्न भये और हा-
थ पांव धोय आचमन करि वा राक्षसी के पास आय बैठ क-
हन लगे बतावे। तब वह राक्षसी मंत्रोपदेश विन को करत भई

नदी के किनारे जाय सवेरे के पहर वा राक्षसी ने महा अशोपदे-
श राजा मंत्रीन को कियो वह पहले जो हम कहे हैं सोही मंत्र औ-
र वह विसूचिका ने भी बताय दीनो तब वे दोऊ कृतार्थ होय ग-
ये तब राक्षसी विन को बिदा करि आपहू चलन लगी तब ही रा-
जा वासों कछु कहत भयो कहा कि अरी देवी तू हमारी गुरु है
तासों हम तेरी विनती करे हैं जो तू हम पै कृपा करु स्नेह सौहा-
र्द करु। अपनो यह भयानक स्वरूप छिपाय करि सुंदर स्वरू-
प बनाय हमारे घर चलु कछुक दिन वहां रहो बड़े आनंद सों
हम तुमारे सेवक सेवा करेंगे वशिष्ठ कहे हैं अहो राम राक्षसी
यह राजा की बात सुनि फिर बोली। राजा ठीक तुमने कही यह
ऐसे ही है मेरे राक्षस रूप को बड़ो भोजन विस्तार तुम पै निबा-
हो न जाय। सुंदर छोटी सी स्त्री को निर्बाह बने यह सत्य है। ता-
सो मैं तुमारे घर कैसे चलों मेरो स्वभाव राक्षसी को कैसे छूटे।
तब यह सुनि राजा बोलो अहो देवि तुम बहुत सुंदर मानुषी स्त्री
को रूप बनाय सुंदर गहना कपड़ा पहिर मेरे घर में आनंद सों।
कछु क दिन रहो हम तुमारी सेवा अच्छी करेंगे भोजन की तो
चिंता मति ही करो जो मेरे राज्य में छोटे बड़े चोर पापी अधर्मी
बध के लायक मनुष्य होयगे तिनहिं पकड़ बांधि ले आयके तेरे
पास डारेंगे विन को भोजन करु बड़े आनंद सों मेरे घर बिरा-
जो भोजन करती बिरियां अपनो राक्षसी शरीर करियो एकां-
त में बैठ भोजन करि पीछे फिर सुंदर स्त्री बनि बैठियो भोजन
हिमाचल के शिखर में एकांत में कीजियो। आनंद सों सोइयो
जब जागे जब क्षुधा लगे तब मेरे पास ते भोजन ले जायो करि।

और जब तब मोसों मिलाप करि जायो करि दर्शन अपने देतरहु
। वह भोजनी वह निद्रा वानन को एकांत ही वास योग्य होइहै
राक्षसी यह राजा को बचन सुनि के फिर बोली। राजा तुमने अ-
च्छीही बात कहि मेरे भले की ऐसी बात कौन को अछी न लगे
अच्छो मैं चलूं हूं तुमारे घर। वशिष्ठ रामजी सो कहै हैं अहो राम
वह राक्षसी इतनो कहिके अपनी माया के बलसूं बहुत सुंदर
एक स्त्री बनी सुंदर अनेक गहना हार बिजायठ बाजूबंद क-
ड़ा इन को आदि लेकरि जाके शरीर में सोहै है और सुंदर कप-
ड़ा पहरि करि राजा के और मंत्री के आगे चलबे की तयारी क-
रि कहन लगी आहो राजा अहो मंत्री चलिये मैं तुमारे संग हूं
इतनो कहि वह राक्षसी राजा मंत्रीन को बिदा करि अपना
राति मेंही चली चली राजा के घर में आई वहां बैठि करि अ-
नेक बातें करत्ति रात्ति बीती सबेरे की बिरियां महिलन में व-
ह राक्षसी गई। राजा मंत्री अपनी कचहरी में आये राज का-
ज के धंधे अपने करत भये। इतने में दिन छै बीत्ते तामें रा-
जा ने अनेक पापी अधर्मी पकड़ इकट्ठे कीने तीन हज़ार
गिनती मेंते सब वा राक्षसी के खायबे को आगे धरे। वह
राक्षसी जब रात्ति भई तब अपनो वही भयानक कारी रा-
क्षसी रूप करि विन अपराधी पापिष्ट मनुष्यन के तीनों ह-
ज़ार के ढेर की गांठि बांधि हाथ में लेकरि राजा सों पूछि क-
रि हिमाचाल के इकीसे शिखर में जाय बैठी जैसे दरिद्री क-
हूं सूं मिलो सोनो वाकी गांठि बांध लेजाय घर में आय बैठे फिर
वह राक्षसी वहां पेट भरि के भोजन कीनो दोय दिन रात्ति

सुख सोई और फिर जाग के मध्य याम करत योगाभ्यास सा-
धन लगी प्राण ब्रह्मरंध्र में चढ़ाय दीने ऐसे पांच बरस की स-
माधि कीनी पीछे छठे बरस समाधि सों उठि वाही राजा के पा-
स आई राजा ने पूजा कीन बहोत वासूं मीठी मीठी बातें कीनी
कछुक दिन रही इतने में वा राजा ने वे अपराधी पुरुष कछु
इकठे किये तिन्हें लेकर वाही पर्वत के शिखर में फिर आय
बैठी। ऐसे हमेस करत भई वहां बास वह राक्षसी राम जी य-
ह तुम निःसंदेह जानो। इति महारामायणे योग वाशिष्ठ
सूच्युपाख्याने सर्गः॥८१॥२५॥ वशिष्ठ राम जी के आगे क-
हे हैं अहो राम जब वह राक्षसी वा किरात भीलन के राज्य में
रहन लगी तब वहां के जितने राजा हे तिन सों याकी बड़ी।
मैत्री प्यार बधि गयो यहू वाको भलो करे है। वह राक्षसी
भी विन के राज्य में उत्पात बाधा पिशाच भूत भय रोग।
दोष उपद्रवन को अपने योग बल सों शांत कर देत सबन
को आनंद देत भई। अपनो वही नियम बांधत भई जो वा
पर्वत के शिखर में रहे हमेस ध्यान करो करे जब भूख ल-
गे तब राजा के पास आय अपनो भोजन लेजाय सुख सों
जाय बैठन लगी। ऐसे अहो राम वह राक्षसी वा देश में अब
ताई है अबहूं वहां को राजा वैसेही मारबे लायकन को।
पकर वा देवी के स्थान पै बलिदान करत है वह देवी वाज-
गे कंदरा देवी मंगाला देवी नाम सों बिख्यात होय रहीहै
वा राजा ने सुंदर मंदिर एक बनवाय वाही पर्वत के तरहटी
में प्रतिष्ठा कर देत भयो वहां के सब प्राणी वाकी पूजा मानत

करत भये नित्य नित्य बड़ो बिभव बढ़ो। वाकी प्रतिमा वहां अबताईं बिराज मानहै सबनकेमनोरथ वा प्रतिमा द्वारा वह राक्षसी पूर्ण करेहै अहो राम जी ऐसी वह सूची सबलोकन को मंगल की देवनवारी अनेक पापी जनन को भोजन करन वारी भील वाड़े के सब लोकन को आनंद दान देत वह राक्षसी परम देवता रूप सों बिराज मान होयरहे है आज की घड़ी ताईं जो वाकी आराधना करे वाके मनोरथ पूर्ण करे है ॥ वशिष्ठ राम जीसों कहेहैं अहो राम यह सूची को उपाख्यान हमने संपूर्ण तुम को सुनायो है याको जो पढ़ेगो देखेगो वाको बिशूचिका की पीड़ा कबहूं न होयगी ॥ इति महा रामायणे योग वाशिष्ठ सूच्युपाख्याने समाप्तम ॥ ८२ ॥ संवत्नंद रसाष्ठ भूमि गणिते कृष्णः पक्षके द्वादश्यां शशि वार योगिन तिथो भाषा निबंधो रामल । संपूर्ति किलखस्म वल्लभ सुधी लेखी कृत प्रेरणा द्राज श्री जित राज राज पटिनी मज्ञार्य वर्यस्यसनू ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ ० ॥ ० ॥ ० ॥ ॐॐॐ

इति

नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब
पाराशरी	भोज प्रबंधसार	सकीलदायरा	इंडियनपिनलकोड
शीघ्रबोध	राजनीति	रेखागणित १ भाग	मजमूआ ज़ाबिता फ़ौ-
लघुजातक	तथा	तथा २ भाग	जदारी ऐक्ट २५ सन्
षट्पंचाशिका	भाषालघुव्याकर	बीजगणित १ भाग	१८६० ई०
सामुद्रिक	ण १ भाग व २ भा-	तथा २ भाग	ऐक्ट स्टाम्प १० सन्
सरिश्तेतालीमकी	भाषातत्त्वदीपिका	रामायण तुलसीकृ-	१८६२ ई०
पुस्तकें	भाषा चन्द्रोदय	बालकाण्ड	ऐक्ट रजिस्टरी २० सन्
संस्कृत	भूगोलतत्त्व	अयोध्याकाण्ड	१८६६ ई०
ऋजुपाठ १ भाग	भूगोलदर्पण	आरण्यकाण्ड	ऐक्ट स्टाम्प अदालत
तथा २ तथा ३ भा-	इतिहासतिमिरना-	किष्किन्धाकाण्ड	२६ सन् १८६७ ई०
धात्वर्णाव	शक १ भा० व २ व ३	सुन्दरकाण्ड	मजमूआ ऐक्ट अवध
नागरी	अवधदेशीय भू-	लंकाकाण्ड	लगान १९ सन् १८६८
वर्णमाला १ भाग	गोल	उत्तरकाण्ड	ई० पुरन्नादारी २६ स-
तथा २ भाग	इंग्लिस्तानकाइति-	गुटका १ भाग	न् १८६६ ई० वगैरा
तथा कैथी फ़ारसी	हास	तथा २ तथा ३	ऐक्ट स्टाम्प दस्तावेज़ा-
नागरी हरूफ़ मुफ़र्दात	भारतवर्षीय का इ-	हिदायतनामा मुद-	त १८ सन् १८५९ ई०
अक्षरारम्भ	तिहास	रिसान्	ऐक्ट ताल्लुक़ेदारान्
वर्णप्रकाशिका	हितोपत्रिका	पशुचिकित्सा	मक़रूज़ अवध २४
१ भाग व २ भाग	बालभूषण	पट्टा व खत कैथी	सन् १८७० ई०
सूरजपुरकी कहानी	पद्यसंग्रह	तथा क़बूलियत	ऐक्ट चौपायोंकी मदा-
धर्म्मसिंहका वृत्तांत	भाषाकाव्यसंग्रह	रजिस्टर दाखिल	खिलत बेजा का ऐक्ट
शिक्षावली	कवित्तरत्नाकर १ भा-	ख़ारिज तुलबा म-	१ सन् १८७१ ई०
शिशुबोध	तथा २ भाग	दर्सा	मजमूआ ज़ाबिता
पत्र लिखने की रीति	मंगलकोश	रजिस्टर हाज़िरी पा-	फ़ौजदारी १० सन्
पत्रदीपिका	अंकप्रकाश	ठशाला	१८७२ ई०
विद्याचक्र	गणितप्रकाश १ भा-	क़ानून	ऐक्ट माल गुज़ारी
विद्यांकुर	तथा २ व ३ व ४	नागरी	अगरवी व शिमाली
पदार्थविद्यासार	गणितक्रिया	ऐक्ट लगान मग़रवी	१९ सन् १८७३ ई०
पदार्थविज्ञानवि-	क्षेत्रप्रकाश	व शिमाली १० सन्	तरमीम मजमूआ ज़ाबि-
टप	क्षेत्रचन्द्रिका १ भा-	१८५९ ई०	ता फ़ौ० ११ स- १८७४ ई०

नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
भजनावली	रॉबिन्सन्क्रूसोकाइ-	जनकपच्चीसी	दुर्गापाठसटीक
प्रेमरत्न	तिहास	आनन्दामृतवर्षिणी	दुर्गास्तोत्र
युगलविलास	वैद्यक	बनयात्रा	कायस्थकुलभास्कर
चित्रचन्द्रिका	निघण्टभाषा	कायस्थवर्णनिर्णय	कायस्थधर्म्मनिरूपण
बारहमासाकन्हैयाप्र	अमरविनोद	विहारविन्द्रावन	तथा छीटा
मनोहरलहरी	वैद्यजीवन	समरविहारविन्द्रावन	मथुरा
गंगालहरी	औषधिसंग्रहकल्प	कल्पभाष्य	ज्योतिष
यमुनालहरी	वल्ली	दरसी	मुहूर्त्तगणपति
जगतविनोद	अमृतसागर	अक्षरावली	मुहूर्त्तचक्रदीपिका
राग	वैद्यमनोत्सव	स्वयम्बोध	मुहूर्त्तचिन्तामणि स॰
रागप्रकाश	ज्योतिष	ज्ञानचालीसी	मुहूर्त्तमार्त्तण्ड स॰
लावनी	जातकचन्द्रिका	दोहावली	मुहूर्त्तदीपिका
शृंगारबत्तीसी	जातकालंकार	बालाबोध	वृहज्जातकसटीक
किस्सह वगैरह	दैवज्ञाभरण	विद्यार्थीकी प्रथम	जातकालंकार स॰
नानार्थसंग्रहावली	ज्ञानस्वरोदय	पुस्तक	जातकाभरण
ब्रह्मसार	रमलसार	किताबजंत्री	होरामकरन्द
शिवसिंहसरोज	इन्द्रजाल	गणितकामधेनु	संस्कृत उर्दू टीका स॰
भक्तमाल	मुतफ़र्रक़ात	लीलावती	मनुस्मृति
रामाभिषेकनाटक	शनिश्चरकी कथा	पटवारियोंकी पुस्तक	विष्णुहारीत
इन्द्रसभा	ज्ञानमाला	४ भाग	महिम्नस्तोत्र
विक्रमविलास	गोपीचंद भरतरी	संस्कृतकी पुस्तकें	संस्कृत भा॰टी॰स॰
बैतालपच्चीसी	कथा श्रीगंगा जी	लघुकौमुदी	अमरकोषतीनोंकांड
सिंहासनबत्तीसी	अवधयात्रा	सिद्धान्तचन्द्रिका	याज्ञवल्क्यस्मृति
पद्मावतीखण्ड	भरतरीगीत	अमरकोषतीनोंकांड	सन्ध्यापद्धति
शुकबहत्तरी	दानलीला नाग-	पंचमहायज्ञ	व्रतार्क
बकावलीसुमन	लीला	निर्णयसिन्धु	भगवद्गीताटी॰हरिवंश
चहारदरवेश	दोहावलीरत्नावली	संग्रहशिरोमणि	भगवद्गीताटी॰आनंदगि॰
क़िस्साहातिमताई	गोकर्णीमहात्म	भगवद्गीतासटीक	गीतगोविन्द
अपूर्वकथा	श्रीगोपालसहस्रना	विष्णुभागवत	कथा सत्यनारायण
क़िस्सागुलसनोबर	कथासत्यनारायण	भविष्योत्तरपुराण	